मेधा सूक्त

इन पाठों के बारे में

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

मेधा सूक्त

प्रकार	सूक्त
देवता	माँ सरस्वती
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	वैदिक
स्रोत	संस्कृत विकिस्रोत (sa.wikisource.org) — महानारायणोपनिषत्, revision 400459, anuvakas 41–44
आभार	पाठ: संस्कृत विकिस्रोत योगदानकर्ता (CC BY-SA 4.0), "महानारायणोपनिषत्" (संशोधन 400459)। मिलान, सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Text in the public domain (Vedic). Transcription from Sanskrit Wikisource, CC BY-SA 4.0.

एकचत्वारिंशोऽनुवाकः ।

ekacatvāriṃśo'nuvākaḥ |

मेधादेवी जुषमाणा न आगाद्विश्वाची भद्रा सुमनस्यमाना ।

medhādevī juṣamāṇā na āgādviśvācī bhadrā sumanasyamānā |

त्वया जुष्टा जुषमाणा दुरुक्तान्बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ १॥

tvayā juṣṭā juṣamāṇā duruktānbṛhadvadema vidathe suvīrāḥ || 1||

त्वया जुष्ट ऋषिर्भवति देवि त्वया ब्रह्मागतश्रीरुत त्वया ।

tvayā juṣṭa ṛṣirbhavati devi tvayā brahmāgataśrīruta tvayā |

त्वया जुष्टश्चित्रं विन्दते वसु सा नो जुषस्व द्रविणेन मेधे ॥ २॥

tvayā juṣṭaścitraṃ vindate vasu sā no juṣasva draviṇena medhe || 2||

द्विचत्वारिंशोऽनुवाकः ।

dvicatvāriṃśo'nuvākaḥ |

मेधां म इन्द्रो ददातु मेधां देवी सरस्वती ।

medhāṃ ma indro dadātu medhāṃ devī sarasvatī |

मेधां मे अश्विनावुभावाधत्तां पुष्करस्रजौ ॥ १॥

medhāṃ me aśvināvubhāvādhattāṃ puṣkarasrajau || 1||

अप्सरासु च या मेधा गन्धर्वेषु च यन्मनः ।

apsarāsu ca yā medhā gandharveṣu ca yanmanaḥ |

दैवी मेधा सरस्वती सा मां मेधा सुरभिर्जुषताꣳ स्वाहा ॥ २॥

daivī medhā sarasvatī sā māṃ medhā surabhirjuṣatāꣳ svāhā || 2||

त्रिचत्वारिंशोऽनुवाकः ।

tricatvāriṃśo'nuvākaḥ |

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

आ मां मेधा सुरभिर्विश्वरूपा हिरण्यवर्णा जगती जगम्या ।

ā māṃ medhā surabhirviśvarūpā hiraṇyavarṇā jagatī jagamyā |

ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमाना सा मां मेधा सुप्रतीका जुषताम् ॥ १॥

ūrjasvatī payasā pinvamānā sā māṃ medhā supratīkā juṣatām || 1||

चतुश्चत्वारिंशोऽनुवाकः ।

catuścatvāriṃśo'nuvākaḥ |

मयि मेधां मयि प्रजां मय्यग्निस्तेजो दधातु ।

mayi medhāṃ mayi prajāṃ mayyagnistejo dadhātu |

मयि मेधां मयि प्रजां मयीन्द्र इन्द्रियं दधातु ।

mayi medhāṃ mayi prajāṃ mayīndra indriyaṃ dadhātu |

मयि मेधां मयि प्रजां मयि सूर्यो भ्राजो दधातु ॥ १॥

mayi medhāṃ mayi prajāṃ mayi sūryo bhrājo dadhātu || 1||

अर्थ

संक्षिप्त भावार्थ, अनुवाद नहीं। सर्वव्यापिनी, भद्र और प्रसन्न मेधा देवी हमारे पास आएँ; उनकी कृपा से हम सभा में सुवीर पुत्रों के साथ उत्तम वचन कहें। जिस पर वे प्रसन्न हों वह ऋषि, ब्रह्मज्ञ और धनवान् होता है; वे द्रविण के साथ हमें स्वीकार करें। इन्द्र, देवी सरस्वती और पुष्करमाला धारण करने वाले दोनों अश्विनौ मुझे मेधा दें; अप्सराओं और गन्धर्वों की मेधा, दैवी सुरभि मेधा मुझ पर प्रसन्न हो; विश्वरूपा, हिरण्यवर्णा, ऊर्जस्वती, पयस्विनी मेधा मुझे स्वीकार करे। अग्नि, इन्द्र और सूर्य मुझमें मेधा, प्रजा, तेज, इन्द्रिय-बल और भ्राज स्थापित करें।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।